सखी री जान बूझ

सखी री जान बूझ क्यों खोइए, ऐसा अलेखे सुख अखण्ड।
सो जाग देख क्यों भूलिए, बदले सुख ब्रह्मांड।।

एक खिन न पाइए सिर सार्टें, कई मोहोरों पदमों लाख करोड़ ।
पल एक जाए इन समें की, कछु न आवे इनकी जोड़।।

इन समें खिन को मोल नहीं, तो क्यूं कहूं दिन मास बरस।
सो जनम खोया झूठ बदले, पिउसो भई ना रंग रस।।

सो इत भी होए चले धंन धंन, धाम धनी कहें धंन धंन।
साथ में भी धंन धंन हुइयां, याके धंन धंन हुए रात दिन।।

महामत कहें लिया मांग के, ए धनिएं देखाया छल।
जो सनमुख रहेसी धनी धामसों, सो केहेसी छल को बल।।